WORKSHOP ON RESEARCH METHODOLOGY – 2

National Workshop on Research Methodology was organized under the joint aegis of Department of Sociology, Economics and History from 10 January 2018 to 12 January 2018.The central points of this workshop are as follows:

- Research Subject Selection and Methodology
- Survey of Literature and Libraries
- Data Collection Analysis and Interpretation
- Format Of Research Report / Thesis
- SPSS
- Research Project

In the first session of the workshop, Professor of Sociology of Barkatullah University, Bhopal Dr. SN Chaudhary said that the selection and method of research are important. History plays a role in driving the present Researchers should try to analyze social problems scientifically. Correct presentation of the data obtained with research is also necessary, the young researcher needs to give direction to the research work on burning issues related to society like third gender, live in relationship and human trafficking.

The researchers resolved the queries related to research from the keynote speaker. On the second day of the workshop, Dr. Ravindra Brahne gave a concise lecture on fact compilation analysis and lectures. He said that most of the candidates are unaware of the importance and seriousness of the topic chosen during their research work. Researchers should know the knowledge of the selected subject and collect and analyze the related facts, for this work they should have a hold on the subject. Otherwise, despite their hard work, the thesis gets rejected. In the third technical session, Dr. Mahesh Shukla, Professor of TRS College, Rewa, provided important information on the research report and thesis format. He told that every university has a prescribed format for presenting the research report, according to which there was improvement and should submit its research report. There are difficulties in submitting the thesis in the absence of desired and letters.

In the first session of 3rd Day, Dr. Rajeev Chaudhary, Department of Physical Education, Pandit Ravi Shankar Shukla University, Raipur, acquainted the researchers with the use of statistical methods in research, describing the various dimensions of research methodology in detail. In the last session, Dr. Anil Pandey, Head of the Department of History, explained in detail on how to prepare the bibliography. The attendance of 98 researchers remained the same on all three days of the workshop. Everyone solved their queries with the speakers. Convener of this program was Dr. Suchitra Sharma and program secretary Dr. Ashwani Mahajan, Dr. K. Padmavati and Dr. Jyoti Dharker.

बरकतउल्ला विवि भोपाल के प्रो. चौधरी ने कहा... **11.01.2018**

शोध कार्य का उद्देश्य सदैव सामाजिक हित में हो

साइंस कालेज में शोध छात्र-छात्राओं की कार्यशाला...

पत्रिका PLUS रिपोर्टर 11.1.18

दुर्ग • शोध कार्य का उद्देश्य सदैव सामाजिक हित में हो इस बात का प्रत्येक शोधार्थी को ध्यान रखना चाहिए। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल के समाजशास्त्र के प्राध्यापक डॉ. एसएन. चैधरी ने शासकीय विश्ननाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में यह विचार व्यक्त किये। डॉ. चैधरी बुधवार को महाविद्यालय के समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं इतिहास विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 3 दिवसीय कार्यशाला के मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। शोध प्राविधि विषय पर आधारित इस कार्यशाला में विभिन्न प्रदेशों के लगभग 100 शोध छात्र-छात्राएं हिस्सा ले रहे हैं। महाविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में आयोजित इस राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में उपस्थित प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. चैधरी ने कहा कि शोध का चयन व पध्दति महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान को संवारने में इतिहास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में इतिहास के कुछ अंशों की पुर्नलेखन की आवश्यकता है। शोध कर्ताओं को सामाजिक समस्याओं के वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण का प्रयास करना चाहिए। आज भी हमारे शोध कार्यों में विदेशी प्रणाली का स्पष्ट प्रभाव झलकता है। शोध करने के साथ-साथ प्राप्त होने वाले आंकड़ों का सही ढंग से प्रस्तुतिकरण शोध कार्य का सबसे प्रमुख अंग है। आदिवासी समाज से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर शोध कर वास्तविक स्थिति को समाज के समक्ष उचित ढंग से लाये जाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य [illegible]ॉ. एसके. राजपूत ने कहा कि नए [illegible] के प्रारंभ में ही महाविद्यालय में [illegible]शभर के युवा शोधकर्ताओं की इतनी बड़ी संख्या में उपस्थिति महाविद्यालय के शोधकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार करेगी। इसी उद्देश्य से यह कार्यशाला आयोजित की गई है। युवा शोधार्थियों को समाज से जुड़े ज्वलंत मुद्दो जैसे थर्ड जेंडर, लिव इन रिलेशनशिप तथा मानव तस्करी जैसे बिंदुओं पर भी शोध कार्य करके इन विकृतियों को समाज से हटाने का प्रयास करना चाहिए। कार्यशाला के आरंभ में इतिहास विभाग की प्राध्यापक डॉ. ज्योति धारकर ने कार्यशाला की विषयं वस्तु पर विस्तृत प्रकाश डाला। अपने स्वागत भाषण में कार्यशाला की संयोजक एवं समाजशास्त्र की प्राध्यापिका डॉ. अश्विनी महाजन ने कहा कि शोध कार्य में शोध प्राविधि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। हर तथ्य का गहराई से विश्लेषण न केवल अकादमिक बल्कि सामाजिक एवं राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। कार्यशाला के प्रथम दिन

पीएचडी में ऐसा विषय भी न चुनें, जिसे पूरा न कर पाएं

12.01.2018

पत्रिका PLUS रिपोर्टर
12.1.18

भिलाई • शोध विषय का चयन एवं पद्धति शास्त्र प्रत्येक शोधकर्ता के लिए अहम होता है। शोधकर्ताओं को शोध विषय के चयन के पूर्व साहित्य अध्ययन के माध्यम से विषय से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी एकत्रित करनी चाहिए। ये बातें साइंस कॉलेज दुर्ग में शोध पद्धति शास्त्र विषय पर चल रही तीन दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन गुरुवार को वक्ताओं ने समझाईं। प्रथम तकनीकी सत्र में सेंट थॉमस महाविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में सहायक प्राध्यापक, डॉ. देवजानी मुखर्जी ने शोध पद्धति शास्त्र के विभिन्न बिंदुओं का गहराई से विश्लेषण करते हुए शोध विषय के चयन, उससे संबंधित आंकड़ों का संग्रहण, सर्वेक्षण की कार्यप्रणाली और प्राप्त होने वालों आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण पर रोचक व्याख्यान दिया। पं.रविशंकर शुक्ल विवि के अर्थशास्त्र के प्राध्यापक डॉ. रवीन्द्र ब्रम्हे ने अपने व्याख्यान में तथ्य संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। डॉ. ब्रम्हे ने बताया कि अधिकांश शोधार्थी अपने शोधकार्य के दौरान चुने गए विषय की महत्ता एवं गंभीरता से अनभिज्ञ होते है। शोधार्थी का पहला कर्तव्य है कि चयनित विषय का ज्ञान एवं उससे संबंधित तथ्यों का संकलन करना। इसके बाद शोधार्थी को अपने स्वयं की अकादमिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं सामाजिक सीमाओं को ध्यान में रखते हुए विषय का चयन करना चाहिए। जरूरत से ज्यादा बड़े विषय को लेकर कई शोधार्थी शोध काल के संपूर्ण समय में कठिनाई का सामना करते है। तृतीय तकनीकी सत्र में अवधेश प्रताप सिंह विवि, रीवा के प्राध्यापक डॉ. महेश शुक्ला ने शोध प्रतिवेदन और थीसिस का प्रारूप विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी उपस्थित प्रतिभागियों को दी। डॉ. शुक्ला ने बताया कि प्रत्येक विश्वविद्यालय में शोध प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए निर्धारित प्रारूप होता है। उस प्रारूप के अनुसार ही शोधार्थी को अपना शोध प्रतिवेदन प्रस्तुत करना चाहिए। यूजीसी के नए नियमों के मुताबिक प्रत्येक शोधार्थी को छः माह का कोर्स वर्क पूर्ण करना आवश्यक है। कोर्स वर्क पूर्ण करने के बाद ही कोई भी शोधार्थी रिसर्च डिग्री कमेटी के समक्ष अपना शोधकार्य का विषय अनुमोदित कराने हेतु पात्र माना जाता है। डॉ. महेश शुक्ला ने बताया कि वर्तमान समय में थीसिस के साथ मौलिकता का प्रमाण पत्र, शोध निर्देशक के साथ 200 दिनों की भौतिक रूप से उपस्थिति का प्रमाण पत्र संलग्न करना जरूरी है।